अद्भुत अलौकिक आख्यान

पुस्तक का नामः काशी मरणान्मुक्ति
लेखकः मनोज ठक्कर और राजेश छाजेड़
प्रकाशकः शिव ॐ साईं प्रकाशन, इंदौर
पृष्ठ संख्याः 510
मूल्यः 360 रुपये

यह एक आध्यात्मिक औपन्यासिक कृति है मात्र इतना भर परिचय इस कृति के साथ अन्याय होगा. सच तो यह है कि यह एक ऐसी अनूठी कृति है जो उपन्यास और महाकाव्य का संतुलित सम्मिश्रण है या फिर ऐसा ग्रंथ जो गूढ़ आध्यात्मिक दर्शन या सत्य के सरलीकरण हेतु मानवीकरण तथा कल्पना की सहायता लेता हो. कथ्य, भाषा, शैली, प्रस्तुति प्रत्येक क्षेत्र में यह समकालीन सद्य प्रकशित पुस्तकों से सर्वथा भिन्न है. इस तरह के आध्यात्मिक उपन्यासों की विशेष परंपरा हिंदी साहित्य में हो ऐसा नहीं लगता, धर्म और जीवन के व्यावहारिक मुद्दों, प्रश्नों को उठाती चित्रलेखा या बुद्ध के जीवन पर लिखी विश्व प्रसिद्ध कृति विराट जैसी कृतियां यदा-कदा ही सामने आती हैं. सर्वकालीन श्रेष्ठ कृतियों से इसकी तुलना धृष्टता होगी पर जिस धरातल पर इस पुस्तक का प्रणयन हुआ है उसके आधार पर उनका संदर्भ लिया भी जा सकता है.

जहां इन श्रेष्ठ कृतियों में कथा पक्ष की प्रधानता के साथ साहित्यक अनुशासन और कला के दर्शन होते हैं, उनकी भाषा का प्रयासहीन प्रवाह और पठनीयता विश्व के विस्तृत पाठकवर्ग को प्रभावित करने के कारण वे अपनी भाषा की सफल श्रेष्ठ कृतियों में गिनी गईं. वहीं इस रचना में भी रहस्य, रोमांच, जुगुप्सा, रोचकता, कलात्मकता, कल्पनाशीलता, यथार्थ चित्रण, साहित्यिक अनुशीलन सबका संतुलित सम्मिश्रण तो है, परंतु यह सब लेखक द्वय द्वारा पूर्ण नियोजन और कठिन प्रयास का फल लगता है. हर अध्याय को येन केन प्रकारेण इस वाक्य पर समाप्त करना, 'याद रख मैं तेरा गुरु नहीं', मात्र एक उदाहरण नहीं.

पुस्तकसंधान से स्पष्ट है कि यह कृति कला कम कौशल अधिक है और यहीं यह पुस्तक लेखक द्वय की उत्कृष्ट, अनूठा प्रयास होने के उपरांत भी समग्रता में साहित्यिक शीर्ष को छूने, श्रेष्ठ साहित्यिक कृति मनवाने में असफल प्रतीत होती है. भाषा क्लिष्ट है, शब्द पूरी तरह संस्कृतनिष्ठ, गवेषणात्मक शैली और कहीं-कहीं जटिल वाक्य संरचना, आध्यात्म आधारित कथावस्तु को पूर्णतः संतुष्ट करती हुई. कहानी की बुनावट अत्यंत सघन है. इसमें रस तो है पर इसका गांभीर्य इसकी श्यानता, सांद्रता को बढ़ा देता है जिसके चलते इसकी गति किंचित मंथर पड़ जाती है. यह एक तरह से उचित भी है क्योंकि यह ठहराव द्वैत-अद्वैत, पराशक्ति के गूढ़ार्थ को समझने, और ग्रहण करने का अवसर प्रदान करता है.

पुस्तक का नायक श्मशान में मिला शिशु है जिसे एक दलित महिला यशोदा उठा लाती है. बड़ा होकर वह चांडाल कार्य वरण करता है, और महा यानी महामृणंगम के नाम से पहचाना जाता है, पूरी कथा महा के मोक्ष की यात्रा है. अनेक प्रसंगों से इस ओर इशारा किया गया है कि महा में शिवत्व है, सत्य, गुरू ज्ञान की खोज में महा चारो धाम और बारह ज्योतिर्लिंगों की यात्रा करता है पर अंततः काशी आकर उसे ज्ञान प्राप्त होता है. वह काया को काशी मानकर भीतर के शिव को पहचान लेता है. यहीं वह मरणान्मुक्ति को प्राप्त होता है.

पुस्तक सामान्य पाठकों के रुचि क्षेत्र से परे है तथापि एक वर्ष में पुस्तक का तीसरा संस्करण प्रकाशित होना यह बताता है कि इसकी मार्केटिंग कितनी कुशलता से की गई. पुस्तक का लोकार्पण मॉरीशस में वहां के प्रधानमंत्री के हाथों हुआ, कलाम से लेकर दलाई लामा और प्रतिभा पाटिल से लेकर सिने सितारे तक इसे अपनी सम्मति से सुसज्जित कर चुके हैं. इस एक अकेली पुस्तक की एक आधिकारिक वेबसाइट भी *(http://www.kashimarnanmukti.com/)* है. जिस पर पुस्तक के साथ-साथ लेखक का भी पर्याप्त प्रचार है. यदि अपने को विशिष्ट पाठक मानते हों तो इस पुस्तक को पढ़ने का साहासिक प्रयास कर आनंद उठा सकते हैं.

संजय श्रीवास्तव